परिप्रेक्ष्य

शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

वर्ष 24, अंक 2, अगस्त 2017

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय
17-बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110 016

परिप्रेक्ष्य
वर्ष 24, अंक 2, अगस्त 2017

विषय सूची

आलेख

ऋषभ कुमार मिश्र
सामाजिक विज्ञान शिक्षण : विद्यालयी और विद्यालयेतर विमर्श की पारस्परिकता 1

बृजेश कुमार एवं **पी.के. साहू**
अध्यापक शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन 25

चंद्रकाता जैन एवं **अखिलेश यादव**
उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्रों की शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति 53

शिव कुमार
दिव्यांग बच्चों के प्रति शिक्षामित्रों का दृष्टिकोण 67

शोध टिप्पणी / संवाद

शमीमा अंसारी एवं **शिरीष पाल सिंह**
मदरसे में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अध्ययन 75

रमेश प्रसाद पाठक एवं **अमिता पाण्डेय भारद्वाज**
आर्य समाज व गायत्री परिवार के शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता 89

मधु गुप्ता एवं **विनीता सिंह**
माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य-संलग्नता का अध्ययन 101

परिप्रेक्ष्य
वर्ष 24, अंक 2, अगस्त, 2017

शोध टिप्पणी/संवाद

दिव्यांग बच्चों के प्रति शिक्षामित्रों का दृष्टिकोण
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शिव कुमार*

सारांश

दिव्यांग बालकों के लिए प्रेरणा बहुत आवश्यक है। यह देखना चाहिए कि वह किसी कार्य को करते है तो उन्हें किसी प्रकार की प्रेरणा प्राप्त हो रही है। दिव्यांग बालकों को समस्या किसी एक या अधिक क्षेत्रों में हो सकती है। इस परिपेक्ष्य में शिक्षामित्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह प्राथमिक स्तर के शिक्षक होते हैं। शिक्षामित्र जितना अधिक दिव्यांग बालकों के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण और जागरूक होंगे, दिव्यांग बालकों की शिक्षा में आ रही समस्याओं को उतना ही जल्दी दूर किया जा सकेगा। प्रमुख शब्द हैं: दिव्यांग बालक, विशिष्ट शिक्षा, शिक्षामित्र, सकारात्मक दृष्टिकोण, नकारात्मक दृष्टिकोण, विकलांगता, शिक्षक जागरूकता।

भूमिका

शिक्षा अनवत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा अच्छे जीवन स्तर के लिए मानव व्यवहार को नियन्त्रित करती है। साथ ही व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक होती है। समाज के प्रत्येक सदस्य का यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी क्षमताओं व योग्यताओं का अधिकतम सीमा तक विकास करके समाज की उन्नति व प्रगति में अपना योगदान दें। कुछ व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास सामान्य शिक्षा के द्वारा होता है। लेकिन प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो किसी कारणवश शारीरिक व मानसिक रूप से

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़